(1)

Lecture Series No-58

online class
B.A Part-II (S)
Day,
Date- 3/4/2022
Time-10:50 to 11:40 AM

TOPIC,

(I) Asramadharama

Dr. Surita Kumari
Depart. of philosophy,
B.A Part -II
Paper -(S)
A. N. D. College shahpur Patory,
Samastipur,

Ans:-

डॉ० ब्रजनाथ सिंह के अनुसार, " आश्रम का तात्पर्य जीवन का वह विभाग है, जिसमें मनुष्य प्रयास करता है अर्थात जीवन को नियमित बनाने के लिए प्रयास करना अथवा प्रशिक्षण प्राप्त करना है। आज व्यवस्था के अन्तर्गत मानव जीवन को चार स्तरों में बाँटा गया, जिसमें अन्तिम लक्ष्य मोक्ष, पाने के लिए प्रयास किया जाता है। इस संदर्भ में श्री पी० एन० प्रभु ने बताया कि आश्रम को जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए मानव द्वारा की जाने वाली जीवन - यात्रा मध्य विश्राम स्थलों के रूप में मानना चाहिए।" इसी प्रकार महाभारत में

P.T.O.

दयानन्दजी ने कहा है कि जीवन के चार विश्राम स्थल व आश्रम के चार सरणियों वाली सीढ़ी समझना चाहिए। सिढ़ी 'ब्रह्म' तक पहुँचने वाली होती है। व्यक्ति इस सीढ़ी के द्वारा ब्रह्म के पास पहुँच जाता है। अर्थात् वह मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

आश्रम - व्यवस्था के चार स्तर इस प्रकार है:- (i) ब्रह्मचर्य आश्रम (ii) गृहस्थ आश्रम (iii) वानप्रस्त आश्रम और (iv) सन्यास आश्रम। इनका प्रत्येक स्तर २५ वर्ष का होता है, सर्वप्रथम प्रत्येक ब्रह्मचर्य में प्रवेश करता है। ब्रह्मचर्य के बाद गृहस्थ, गृहस्थ के बाद वानप्रस्थ, etc.

END.